ये अव्यक्त इशारे

अब अपनी पुरानी नेचर व संस्कारों का परिवर्तन करो

19-11-2022

जब नेचर ही ज्ञानी-योगी की होगी तो धारणा भी नेचुरल होगी। बार-बार पुरुषार्थ नहीं करना पड़ेगा कि इस गुण को धारण करूँ, उस गुण को धारण करूँ। लेकिन पहले फाउन्डेशन के समय ही ज्ञान, योग और धारणा को अपनी जीवन बना दी इसलिए यह तीनों सब्जेक्ट ऐसी आत्मा की स्वतः और स्वाभाविक अनुभूतियां बन जाती हैं। उन्हें सहज योगी, सहज ज्ञानी, सहज धारणा-मूर्त कहा जाता है।

Now transform the old nature and old sanskars.

When your nature is that of a gyani and yogi soul, your dharna too will be natural. You won't repeatedly have to make effort to imbibe one particular virtue or another. This is because, at the time of laying the foundation, you made your life one of gyan, yoga and dharna. This is how all these three subjects become the natural and automatic experience of the soul. Such a soul is called an easy gyani, an easy yogi and an embodiment of easy dharna.